गुप्त कलीसिया–9
मसीह की देह
डॉ. डेविड प्लॉट

Part 5

कलीसिया अनुशासन लागू करना नहीं जानती है। आज के संदर्भ में कलीसिया में अनुशासन प्रासंगिक नहीं है।

आइए हम इन तर्क पर विचार करें।

वे कहते हैं कलीसिया में अनुशासन वैधानिकता लाएगा। नहीं, कलीसिया का अनुशासन प्रेम का होता है। हमारे विचार में किसी की चूक उसके और परमेश्वर के बीच का विषय है। हमें उससे कोई लेना देना नहीं है। यह कैसे हो सकता है कि मैं पाप के विनाश में पड़ूं और आप मुझसे प्रेम करते हैं तो कुछ न करें। आपको तो मुझे बचाना होगा क्योंकि आप मेरे भाई हैं। आप मुझसे प्रेम करते हैं और परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है। इब्रानियों 12:6 में लिखा है कि जिससे परमेश्वर प्रेम करता है उसकी वह ताड़ना करता है। हमें एक दूसरे से प्रेम करना है। डायटूिक बोनहॉफर कहते हैं, "किसी को पाप में गिरने देनेवाली कोमलता से अधिक निर्दयता दूसरी नहीं।" परमेश्वर प्रेम करने में हमारी सहायता करे। यह कलीसिया का अनुशासन है।

अब मत्ती 7:1 के संदर्भ में आप क्या कहेंगे? मत्ती 7:5 पढ़ें, "हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा।"

प्रभु यीशु कहता है किसी की सहायता करने से पूर्व अपने आंख का लट्ठा निकाल। वह यह नहीं कहता कि उसकी आंख का तिनका मत निकाल। उसके कहने का अर्थ है कि स्वयं की भूल सुधार कर दूसरे की भूल सुधारो।

वे कहते हैं लोग कलीसिया छोड़कर चले जाएंगे। यह परमेश्वर की कलीसिया है, हमारी नहीं। प्रेरितों के काम 5:1–14, "हनन्याह नामक एक मनुष्य और उसकी पत्नी, सफीरा ने कुछ भूमि बेची और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उसकी पत्नी भी जानती थी, और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पांवों के आगे रख दिया। पतरस ने कहा, "हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र

आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े? जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।" ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा और प्राण छोड़ दिए, और सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया। फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया। लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर, भीतर आई। तब पतरस ने उससे कहा, "मुझे बता क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची थी?" उसने कहा, "हां, इतने ही में।" पतरस ने उससे कहा, "यह क्या बात है कि तुम दोनों ने प्रभु की आत्मा की परीक्षा के लिये एका किया है? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले द्वार ही पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएंगे।" तब वह तुरन्त उसके पांवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए; और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया। सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया। प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे। परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे। विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।"

हनन्याह और सफीरा ने झूठ बोला और मारे गए। और अन्त में लिखा है असंख्य स्त्री–पुरुष कलीसिया में जुड़ गए। यह परमेश्वर का काम है कि कलीसिया का विकास करे।

कलीसिया को अनुशासन लागू करना नहीं आता है। कलीसिया को सीखना है कि अनुशासन लागू करे।

कलीसियाई अनुशासन के दो परिप्रेक्ष्य हैं। प्रशिक्षण द्वारा कलीसिया में अनुशासन लाना। कलीसिया में वचन की लगातार शिक्षा द्वारा मसीह के स्वरूप बन जाना। प्रतिदिन हमारा अनुशासन किया जाता है। परमेश्वर का आत्मा और परमेश्वर का वचन हमारा अनुशासन करता है। यह मसीह यीशु के अनुसरण का अनुशासन है। दूसरा है, पुनरुद्धार का अनुशासन। भाई या बहन के जीवन में अपश्चाताप के पाप का सुधार। गलातियों 6:1 और मत्ती 18 में यही है कि किसी भाई के जीवन में मन फिराव हो तो उसके पुनरुद्धार का प्रयास करो।

मैं चाहता हूं कि हम कलीसियाई अनुशासन के आधार पर परमेश्वर के अनुग्रह पर ध्यान दें। परमेश्वर अपने अनुग्रह द्वारा हमें अनुशासित करता है। तीतुस 2:11–14, "क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, जो

सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं; और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले–भले कामों में सरगर्म हो।"

अतः सुनिश्चित करें कि अनुशासन में परमेश्वर का अनुग्रह व्याप्त हो। अब मैं इन दो बातों को कैसे संयोजित करूं?

प्रभु यीशु हमारी सहायता करता है।

कलीसियाई अनुशासन पर विचार। हम मत्ती 18:15–20 देखेंगे और विचार करेंगे कि कलीसियाई अनुशासन पर प्रभु यीशु क्या निर्देश देता है। पहले तो हम संदर्भ देखेंगे।

मत्ती 18:4, "जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।"

प्रभु यीशु का पहला आदेश है, बच्चे की नाईं दीन होना। दूसरी बात किसी को पाप में न डालना। मत्ती 18:6 में पवित्रता की गहन चिन्ता है, "पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता।"

और दुःखित के प्रति हमारे मन में तरस हो, मत्ती 18:14, "ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो।"

परमेश्वर ने कलीसिया का अनुशासन इसलिए निर्धारित किया है कि हम प्रत्येक विश्वासी की रक्षा करें और उसकी सुधि लें। यही परमेश्वर का उद्देश्य है।

हमारे मन में क्षमादान होना है। कलीसियाई अनुशासन के तुरन्त बाद प्रभु यीशु भाई को क्षमा करने का आदेश देता है। मत्ती 18:21–22, "तब पतरस ने पास आकर उस से कहा, "हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध

करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं? क्या सात बार तक?" यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक।"

मैं इस संदर्भ में आपके साथ एक विश्वासी भाई का पत्र बांटना चाहता हूं। "प्रिय पास्टर साहब, दो सप्ताह पूर्व, रविवार को मेरी पत्नी ने आपसे प्रार्थना का निवेदन किया था। वह निवेदन अत्यधिक गंभीर था क्योंकि मैं ऐसी भूल करने जा रहा था जिसका मुझे आजीवन दुःख होता। मैं अपने परिवार को त्यागना चाहता था, न जाने किस प्रयोजन से। संभवतः शैतान की युक्ति के निमित्त। मेरा एक पांव खाई में जाने को उठ गया था परन्तु मेरी पत्नी और उसके सब जानकार मेरे लिए प्रार्थना कर रहे थे कि मैं लौट आऊं। उनकी प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप परमेश्वर ने मुझे रोक लिया और आज हम फिर से एक परिवार हैं।"

कलीसिया में ऐसा ही होना चाहिए परन्तु हम करें कैसे? मत्ती 18:15–20 में प्रभु यीशु के निर्देश हैं, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने, तो एक या दो जन को अपने साथ और ले जा, कि 'हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से निश्चित की जाए।' यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले जैसा जान। "मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे मांगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी। क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।"

यहां केवल एक ही बार है कि प्रभु यीशु ने कलीसिया शब्द काम में लिया है। इसके चार चरण हैं। पहला, निजि सुधार का काम। यदि कोई भाई अपराध में पकड़ा जाए तो उसके पास जाओ– गलातियों 6 और मत्ती 18 यही कहते हैं। दूसरो से चर्चा मत करो। इफिसियों 4:29–32 में पौलुस कहता है कि आवश्यकता के अनुसार मुंह से वही निकले जो उन्नति के लिए उत्तम है। अफवाह कलीसिया के अनुशासन को क्षति पहुंचाती है। अतः उसका अपराध केवल आपके और उसके ही बीच में हो। उसे खाई में मत गिरने दो। उसके पास बच्चे की सी नम्रता के साथ तुरन्त जाओ, पवित्रता की चिन्ता में, अनुग्रह और प्रेम के साथ।

चरण दो, यदि वह अब मन न फिराए और पाप करता रहे तो एक छोटे कलीसियाई दल में उसके पास जाएं। यदि वह मन फिराए तो बहुत अच्छी बात होगी। आपने उसे जीत लिया। यदि नहीं तो कुछ और भाइयों को लेकर उसके पास जाएं। प्रभु यीशु व्यवस्थाविवरण 19:15 का संदर्भ देकर कहता है, "किसी मनुष्य के विरुद्ध किसी प्रकार के अधर्म या पाप के विषय में, चाहे उसका पाप कैसा ही क्यों न हो, एक ही जन की साक्षी न सुनना, परन्तु दो या तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे।"

आपके साथ जो लोग उसके पास जाएंगे वे भी उदार, विनम्र और प्रेम से पूर्ण हों। कहने का अर्थ यह है कि उसे धमकी देने की मनसा से नहीं परन्तु प्रेम और सद्भावना के साथ मसीह के स्वभाव और उसके अनुग्रह में उससे यह कहने जाएं कि आप उससे प्रेम करते हैं और आप उसे प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि वह पाप से मन फिराए क्योंकि पाप विनाश का बीज है। इस प्रकार आप उसे अपनी सहभागिता में ले आएं। यदि वह फिर भी मन न फिराए तो कलीसिया की चेतावनी के सुपुर्द कर दें।

तीसरा चरण, कलीसिया की चेतावनी के सुपुर्द कर दें। ऐसा करना सदस्यों को निर्दयता का व्यवहार प्रतीत होगा। कहने का अर्थ यह है कि पूरी कलीसिया उससे कहे, "हम आपसे प्रेम करते हैं। हमें आपकी चिन्ता है। हम आपको मसीह में लौटा लाना चाहते हैं। हम आपकी सहायता करना चाहते हैं।" परमेश्वर अपनी संपूर्ण देह के लिए यह व्याख्या करता है कि वे उससे प्रेम करें और उसे लौटा लाएं। यह अनुग्रह है, दया है। यह कलीसिया की चेतावनी द्वारा प्रेम है।

चौथा चरण, यदि वह फिर भी न माने तो उसे कलीसिया से बाहर कर दो। यह तो बड़ा कठोर कदम है। आप कहेंगे, "मैं ने तो सोचा था कि कलीसिया में सबका स्वागत किया जाता है परन्तु आप तो उसे बाहर कर रहे हैं। क्या यह प्रेम है? क्या यह सुधि लेना है? क्या यह अनुग्रह है?" जी हां, यह धर्मपरायण है। सुनिये पौलुस क्या कहता है, 1 कुरिन्थियों 5:1–8, "यहां तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन् ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो। मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूं कि जब तुम और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ्य के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य हमारे प्रभु यीशु के नाम से शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए। तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं; क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर देता है। पुराना

खमीर निकाल कर अपने आप को शुद्ध करो कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो। क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है। इसलिये आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से।"

कलीसिया के सदस्यों से पौलुस यौनाचार के समाज में क्या करने को कहता है–

1 कुरिन्थियों 5:9–13, "मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों की संगति न करना। यह नहीं कि तुम बिल्कुल इस जगत के व्यभिचारियों, या लोभियों, या अन्धेर करनेवालों, या मूर्त्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। पर मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्त्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उसकी संगति मत करना; वरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना। क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते? परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है। इसलिये उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो।"

हम इस बाइबल अंश पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं जबकि हमें ध्यान देना आवश्यक है।

कलीसिया से बाहर करने के पीछे उद्देश्य क्या है? कलीसिया की पवित्रता बनाए रखना। यह एक बड़ी बात है। वह कहता है, "हम बुद्धिमान होकर बहुत से लोगों तक पहुंचेंगे। परमेश्वर अपने लोगों की पवित्रता में आपकी कलीसिया की सफलता से अधिक रुचि रखता है। और कलीसिया के सदस्य इसके उत्तरदायी हैं।" पौलुस व्यभिचार में बड़े व्यक्ति से नहीं, कलीसिया से कह रहा है और उनके द्वारा पाप को अनदेखा करने के बारे में कह रहा है। वह कहता है, "तुम परमेश्वर के समक्ष उत्तरदायी हो और तुम एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी हो।"

यह चकित करनेवाली बात है। कलीसिया अपनी कलीसिया के पापों की उत्तरदायी है। हम एक दूसरे के उत्तरदायी हैं। मसीह की देह में एक दूसरे के साथ एकता में रहने का अर्थ यही है। यदि आप पाप में गिरते हैं तो मुझे परमेश्वर को इसका लेखा देना होगा। कलीसिया के सदस्यों को विनम्र भी होना है। कुरिन्थ की कलीसिया का पाप क्या था? घमण्ड। पौलुस कहता है, "तुम्हें घमण्ड है। तुम बड़ी बड़ी बातें करते हो।" उनमें किस बात का घमण्ड था? उनका घमण्ड यह था कि वे अपश्चातापी पापियों को कलीसिया में सहन करते थे। वे कहते थे, "हम सबका स्वागत करते हैं। हमारी कलीसिया का सदस्य कोई

भी हो सकता है।" यह कहना घमण्ड ही है कि आप स्वतंत्रता और अनुग्रह से पूर्ण कलीसिया हो। तुम पाप को स्थान दे रहे हो। इसका विकल्प है विनम्रता अर्थात अपश्चातापी पापियों को कलीसिया से निकाल देना। उसके साथ संगति नहीं करना है। 1 कुरिन्थियों 5 में पौलुस एक बुरे दिन का सामना करता है। अन्य पत्रियों में भी वह लिखता है।

2 थिस्सलुनीकियों 3:6, "हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि तुम हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता और जो शिक्षा उसने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता।"

2 थिस्सलुनीकियों 3:14–15, "यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने तो उस पर दृष्टि रखो, और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो। तौभी उसे बैरी मत समझो, पर भाई जानकर चिताओ।"

तीतुस 3:10, "किसी पाखंडी को एक दो बार समझा–बुझाकर उससे अलग रह।"

परन्तु हमारा सोचना विपरीत है। हम ऐसे व्यवहार को घमण्ड कहते हैं और उन्हें पाप में रहने देने को विनम्रता कहते हैं। सच तो यह है कि पाप को गंभीर न समझना। विनम्रता तो यह है कि पाप का निवारण करना और आवश्यक हो तो पापी को कलीसिया से निकाल देना।

कलीसिया की सहभागिता आवश्यक है।

कलीसिया बताएगी कि सदस्य कौन है। सदस्य नहीं बताएगा कि वह कलीसिया का सदस्य है या नहीं। कलीसिया से बाहर करने का अर्थ है कि वह सदस्य मसीह से भी अलग है। कलीसिया से बाहर किए जाने का अर्थ है कि वह अन्यजाति या कर लेनेवाले के सदृश्य है। यीशु भी यही कहता है। अब आपकी पहचान भाई–बहन नहीं है।

हम कलीसिया की पवित्रता के लिए ऐसा करते हैं और मनुष्य के उद्धार के लिए ऐसा करते हैं। हम उनकी भलाई के लिए ही ऐसा करते हैं कि वे अपनी देह और पाप का परिणाम देखें और परमेश्वर के अनुग्रह से मन फिराएं। अब शैतान ऐसा क्यों करेगा? 2 कुरिन्थियों 12 और 1 तीमुथियुस 1 में प्रकट है कि परमेश्वर शैतान के काम के द्वारा मनुष्यों को अपने ऊपर भरोसा रखने के लिए बाध्य करता है।

2 कुरिन्थियों 12:7–10, "इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूंसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। इसके विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार विनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए। पर उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं।"

1 तीमुथियुस 1:20, "उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया कि वे परमेश्वर की निन्दा करना न सीखें।"

अतः हम कलीसिया की पवित्रता और सदस्यों के उद्धार के लिए ऐसा करते हैं और अन्त में परमेश्वर की महिमा के लिए ऐसा करते हैं।

यहेजकेल 36:22–23 में लिखा है, "इस कारण तू इस्राएल के घराने से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता हैः हे इस्राएल के घराने, मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूं जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र ठहराया जहां तुम गए थे। मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊंगा, जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने उनके बीच अपवित्र किया; और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा, तब वे जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।"

हम क्या करें? कलीसिया में अनुशासन लागू करें। प्रभु यीशु के प्रेम में आज्ञा पालन करें। हमारा लक्ष्य है आत्मिक पुनरुद्धार। याकूब 5:19–20, "हे मेरे भाइयो, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए और कोई उस को फेर लाए, तो वह यह जान ले कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा और अनेक पापों पर परदा डालेगा।"

यही तो हमें करना है। भटके हुए भाई को लौटाकर लाना है। यह हम कैसे करेंगे? विनम्र होकर। नीतिवचन 19:11, "जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है, और अपराध को भुलाना उसको शोभा देता है।"

हम सबने पाप किया है और हम सब को अनुग्रह की आवश्यकता है। अतः विनम्र हों।

बाइबल पर आधारित रहें। तीतुस 3:9, "पर मूर्खता के विवादों, और वंशावलियों, और विरोध और झगड़ों स, जो व्यवस्था के विषय में हों, बचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं।"

आपको यह निश्चित करना है कि आप किसी से खिन्न न हों या यह न सोचें कि वे ऐसा करते हैं, ऐसा नहीं करते हैं। आपको एक प्रश्न पूछना है "क्या पाप है कि परमेश्वर का अपमान हो रहा है? क्या पाप सुसमाचार को क्षतिग्रस्त कर रहा है?" तीमुथियुस को लिखे पत्रों में पौलुस इसकी चर्चा करता है।

1 तीमुथियुस 1:18–20, "हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्ववाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे, और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रहे, जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया। उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया कि वे परमेश्वर की निन्दा करना न सीखें।"

2 तीमुथियुस 2:17–18, "और उनका वचन सड़े घाव की तरह फैलता जाएगा। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं, जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं।"

क्या पाप कलीसिया की एकता को क्षतिग्रस्त कर रहा है? विभाजन लानेवाला पाप जिससे कलीसिया को हानि हो रही है?

रोमियों 16:17–18, "अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे–सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।"

तीतुस 3:9–11, "पर मूर्खता के विवादों, और वंशावलियों, और विरोध और झगड़ों स, जो व्यवस्था के विषय में हों, बचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं। किसी पाखंडी को एक दो बार समझा–बुझाकर उससे

अलग रह, यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है, और अपने आप को दोषी ठहराकर पाप करता रहता है।"

क्या कलीसिया की गवाही पाप के कारण हानि उठा रही है?

समाज में परमेश्वर की महिमा की हानि?

फिलिप्पियों 2:14–15, "सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो, ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो।"

विनम्र बनें, बाइबल पर चलें; तीसरा, पवित्र हों।

मत्ती 7:5, "हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा।"

कलीसिया का अनुशासन हमें अपनी जांच करने पर विवश करता है। किसी भाई को पाप में देखकर आप स्वयं से पूछते हैं, "क्या मैं भी इसी संघर्ष में हूं? मुझे अपनी आंख का लट्ठा निकाल कर भाई की सहायता करना है। अब यह पापी भाई का पुनरुद्धार ही नहीं हमारा पवित्रता में विकास के निमित्त भी है।" अपना जीवन जांचें और अपने उद्देश्य पर ध्यान दें।

पवित्र और प्रार्थनाशील बनें। केवल परमेश्वर ही पुनरुद्धार लाता है।

2 तीमुथियुस 2:25–26, "वह विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचानें, और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं।"

चुप रहें अर्थात केवल उसी से चर्चा करें जिससे चर्चा करने की आवश्यकता है। सब से नहीं।

इफिसियों 4:29, "कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो।"

विलम्ब न करें। मेरा कहने का अर्थ यह नहीं कि टूट पड़ें परन्तु यह कि विलम्ब न करें। मत्ती 5:23–24, "इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिये कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।"

आज्ञा मानें और उदारता प्रकट करें। गलातियों 6 में यही लिखा है कि आज्ञा मान कर उदारता का प्रदर्शन करें। स्वेच्छा से पुनरुद्धार का काम करें। इन बातों पर ध्यान दें।

अतः मसीह के प्रेम में आज्ञा पालन करके मसीह के अधिकार में विश्वास रखें। मत्ती 18:18, "मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।"

प्रभु यीशु के कहने का अर्थ है कि पश्चातापी भाई से जब आप कहते हैं, "मसीह की ओर फिरो। जी हां, आपको क्षमा मिलेगी।" तो आपके शब्दों से क्षमा नहीं मिलेगी। आपके कहने का अर्थ है कि प्रभु यीशु ने जो कहा है वह कलीसिया को सौंपा गया है।

मसीह की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रार्थना करें। मत्ती 18:19, "फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे मांगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी।"

यह पद सदा ही गलत उपयोग किया जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि एक और साथी को खोजें जो आपके समान ही आवश्यकता के लिए प्रार्थना करना चाहता है। यह कलीसिया के अनुशासन के संबन्ध में है। दो या तीन एक मन होकर प्रभु की खोज करें तो वह सुनेगा।

एक और पद है जिसका अर्थ गलत निकाला जाता है।

मसीह यीशु की उपस्थिति। मत्ती 18:20, "क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।"

यह तो है ही परन्तु वह तो आपके साथ तब भी उपस्थित था जब आप अकेले प्रार्थना कर रहे थे। प्रभु यीशु कहता है कि जब तुम आपने भाई के पाप का सामना करते हो तब मैं तुम्हारे साथ हूं। 1 कुरिन्थियों 5 में पौलुस फसह के संबन्ध में कहता है कि प्रभु यीशु ने पाप का दण्ड चुका दिया है।

हमें क्षमा करनेवाला मसीह चाहिए परन्तु क्या हमें पवित्र करनेवाला मसीह नहीं चाहिए? जब हम पाप को समस्या न मानें तो हम मसीह के बलिदान को रौंदते हैं। वह हमें पापों से मुक्ति दिलाने के लिए मर गया। हम इसके अनुरूप जीवन जीएं। क्रूस पर मसीह की मृत्यु कलीसिया में हमारे जीवन को बदल देती है।

कलीसिया आराधना करती है।

प्रेरितों के काम 2:42, "और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"

कलीसिया सुसमाचार सुनाती है, बपतिस्मा देती है, शिक्षा देती है, पोषण करती है और रोटी तोड़ती है। अधिकांश विश्वासियों के विचार में रोटी तोड़ना प्रभु भोज है जो कलीसिया की आराधना का मुख्य भाग था। आराधना परमेश्वर की उपस्थिति में आवाज़ उठाकर सच्चे मन से उसका महिमान्वन करना है। पुराने नियम में और नये नियम में आराधना परमेश्वर के जनों का मूल अंश थी। निर्गमन 7:16, "और उससे इस प्रकार कहना, 'इब्रियों के परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह कहने के लिये तेरे पास भेजा है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, जिससे वे जंगल में मेरी उपासना करें; और अब तक तू ने मेरा कहना नहीं माना।"

यशायाह 66:18–21, "क्योंकि मैं उनके काम और उनकी कल्पनाएं, दोनों अच्छी रीति से जानता हूं; और वह समय आता है जब मैं सारी जातियों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेवालों को इकट्ठा करूंगा। और वे आकर मेरी महिमा देखेंगे। मैं उनमें एक चिन्ह प्रगट करूंगा; और उनके बचे हुओं को मैं उन जातियों के पास भेजूंगा जिन्होंने न तो मेरा समाचार सुना है और न मेरी महिमा देखी है, अर्थात् तर्शीशियों और धनुर्धारी पूलियों और लूदियों के पास, और तबलियों और यूनानियों और दूर द्वीपवासियों के पास भी भेज दूंगा और वे जाति जाति में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे। जैसे इस्राएली लोग अन्नबलि को शुद्ध पात्र में रखकर यहोवा के भवन

में ले आते हैं, वैसे ही वे तुम्हारे सब भाइयों को घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों और सांड़नियों पर चढ़ा चढ़ाकर मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम पर यहोवा की भेंट के लिये ले आएंगे, यहोवा का यही वचन है। और उनमें से मैं कुछ लोगों को याजक और लेवीय पद के लिये भी चुन लूंगा।"

एडवर्ड क्लाउनी का कहना है, "परमेश्वर की कलीसिया के लिए संयुक्त आराधना विकल्प नहीं है वरन् वह कलीसिया के अस्तित्व को ही उजागर करती है। यह पृथ्वी पर स्वर्ग की सभा की वास्तविकता का प्रदर्शन है।"

कलीसिया की आराधना के आधारभूत तत्व

आराधना बाइबल प्रदत्त है। कलीसिया आराधना के लिए एकत्र होती है परन्तु संगीत और अन्य बातें संस्कृतियों के आधार पर अलग अलग हैं। मैं कलीसिया की आराधना के आधारभूत तथ्य–प्रभु भोज पर ध्यान देना चाहता हूं तदोपरान्त कलीसिया की आराधना की कुछ मूल मान्यताओं पर ध्यान दूंगा।

बपतिस्मा मसीह और उसकी कलीसिया के साथ हमारी आरंभिक पहचान को व्यक्त करता है। प्रभु भोज मसीह और उसकी कलीसिया के साथ हमारी सदा की पहचान का पर्व मनाना है। यह प्रभु यीशु द्वारा सुसमाचारों में स्थापित किया गया था। लूका 22:7–23, "तब अखमीरी रोटी के पर्व का दिन आया, जिसमें फसह का मेम्ना बली करना आवश्यक था। यीशु ने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजाः "जाकर हमारे खाने के लिये फसह तैयार करो।" उन्होंने उससे पूछा, "तू कहां चाहता है कि हम इसे तैयार करें?" उसने उनसे कहा, "देखो, नगर में प्रवेश करते ही एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा; जिस घर में वह जाए तुम उसके पीछे चले जाना, और उस घर के स्वामी से कहनाः 'गुरु तुझ से कहता है कि वह पाहुनशाला कहां है जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं?' वह तुम्हें एक सजी–सजाई बड़ी अटारी दिखा देगा; वहां तैयारी करना। उन्होंने जाकर, जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया और फसह तैयार किया। जब घड़ी पहुंची, तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा। और उसने उनसे कहा, "मुझे बड़ी लालसा थी कि दुःख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा।" तब उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और कहा, "इस को लो और आपस में बांट लो। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख का रस अब से कभी न पीऊंगा।" फिर उसने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उनको यह कहते हुए दी, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी जाती हैः मेरे

स्मरण के लिये यही किया करो।" इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, "यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। पर देखो, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिये ठहराया गया जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाता है! "तब वे आपस में पूछताछ करने लगे कि हम में से कौन है, जो यह काम करेगा।"

1 कुरिन्थियों 11:23–32, "क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली, और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये हैः मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, "यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा हैः जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते–पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में से बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। यदि हम अपने आप को जांचते तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।"

प्रभु भोज कौन ले सकता है? विश्वासी प्रभु भोज में सहभागी होकर मसीह के काम में सहभागी होते हैं।

1 कुरिन्थियों 10:16–18, "वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं? इसलिये कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैंः क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं। जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उनको देखोः क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं?"

यह विश्वासियों का भोजन है जब वे कलीसिया रूप में एकत्र होते हैं। अविश्वासी के लिए इसका अर्थ क्या है? वे इसमें सहभागी नहीं हैं परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वे परित्यक्त हैं। मेरे विचार में अविश्वासी प्रभु भोज को देखकर मसीह के काम को समझते हैं। यदि कोई अविश्वासी वहां है तो उसे रोटी नहीं खाना है।

हमारे प्रभु भोज में मैं अविश्वासियों से कहता हूं, "मैं चाहता हूं कि आप हम लोगों को देखें जिन्होंने मसीह यीशु की मृत्यु में जीवन पाया है और यह उसकी स्मृति में हमारे लिए मुख्य बात है।"

प्रभु भोज कहां खाया जाए। बाइबल कहती है कि विश्वासियों की सहभागिता में। यह हम व्यक्तिगत रूप से नहीं कर सकते। 1 कुरिन्थियों 11 में पौलुस तीन बार कहता है कि जब हम इकट्ठे होते हैं। यह कार्य कलीसियाई है।

प्रभु भोज कब खाएं? जब जब कलीसिया एकत्र हो। प्रेरितों के काम 20:7 में साप्ताहिक प्रभु भोज का संकेत है, "सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें कीं; और आधी रात तक बातें करता रहा।"

साप्ताहिक प्रभु भोज के प्रति आपत्ति यह है कि वह आम अभ्यास बन जाएगा। परन्तु दूसरी ओर हमारा भजन गाना और वचन का पाठ भी तो साप्ताहिक होता है।

हम प्रभु भोज को क्या समझें? इसकी प्रथागत समझ हमारी समझ से भिन्न है। अतः मैं ने कहा कि यह मतभेदों में बपतिस्मे से अधिक गंभीर विषय है।

प्रथागत समझः तत्वपरिवर्तन जिससे उद्धार मिलता है। केथलिक कलीसिया का मानना है कि रोटी बदलकर मांस बन जाती है और उसके द्वारा आपमें अनुग्रह प्रवेश करता है। अतः प्रभु भोज सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। परन्तु धर्मसुधारकों का कहना था कि हम अनुग्रह प्राप्ति के लिए ऐसा नहीं करते हैं। यह अनुग्रह को स्मरण करने हेतु है। ट्रेन्ट की महासभा का निर्णय था, "यदि कोई कहे कि पापी केवल विश्वास द्वारा धर्मी ठहरता है और धार्मिकता के अनुग्रह के लिए अन्य किसी काम की आवश्यकता नहीं तो उसे दण्ड का दोषी ठहराया जाए। धर्मसुधार का मुख्य मार्ग यही था। अनुग्रह का अर्थ है अनर्जित, वदान्य।"

अतः प्रभु भोज हम में अनुग्रह प्रवेश हेतु रोटी और दाखरस का प्रभु यीशु के मांस और लहू में परिवर्तन नहीं है। बाइबल के अनुसार यह एक द्योतक भोज है जो उद्धार का प्रकाशन करता है। केवल अनुग्रह द्वारा विश्वास से उद्धार होता है।

रोमियों 4:16, "इसी कारण प्रतिज्ञा विश्वास पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि वह उसके सब वंशजों के लिये दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है वरन् उनके लिये भी जो अब्राहम के समान विश्वासवाले हैं; वही तो हम सब का पिता है।"

गलातियों 1:6–9, "मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो।"

यीशु ने कहा, "यह मेरी देह है।" तो वह हमें प्रतीक बता रहा है। उसने तो यह भी कहा है, "द्वार मैं हूं। दाखलता मैं हूं। ज्योति मैं हूं।" अतः भ्रम में न पड़ें।

हम प्रभु भोज क्यों मनाते हैं? इसके चार कारण हैं: प्रभु यीशु की देह और लहू को स्मरण करने हेतु। अतः प्रभु भोज कल्पना, स्वप्न और मनन नहीं है, अपितु इतिहास की वास्तविकता पर चित्त लगाना है जब उसने हमारे पापों के लिए अपनी देह दे दी और लहू बहाया– हमारे पापों की क्षमा प्रदान की। अतः हम प्रभु यीशु की देह और उसके लहू को स्मरण करते हैं। निर्गमन 24:5–8, "तब उसने कई इस्राएली जवानों को भेजा, जिन्होंने यहोवा के लिये होमबलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाए। और मूसा ने आधा लहू लेकर कटोरों में रखा, और आधा वेदी पर छिड़क दिया। तब वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़ कर सुनाया; उसे सुनकर उन्होंने कहा, "जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे।" तब मूसा ने लहू को लेकर लोगों पर छिड़क दिया, और उन से कहा, "देखो, यह उस वाचा का लहू है, जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बांधी है।"

लैव्यव्यवस्था 17:11, "क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित्त होता है।"

प्रभु भोज में हम अपने पापों पर ध्यान देते हैं। यही कारण है कि पौलुस इसे अनौपचारिक नहीं कहता है परन्तु कहता है कि हम अपने आप को जांचें। हम उसकी प्रतिज्ञाओं पर भी मनन करते हैं। हमें स्मरण होता है कि हमारे पाप क्षमा किए गए। हमारा विवेक अब शुद्ध है और हमारा अपराधी विवेक दूर हुआ। अतः हम उसकी क्षमा और उसकी विश्वासयोग्यता का भोज खाते हैं। वह हमें स्मरण करता है, "तुम मेरे हो। तुम क्षमा किए गए। तुम शुद्ध किए गए हो।" सोचो और स्मरण करो।

हम मसीह के प्रति अपना समर्पण और एक दूसरे के प्रति अपना समर्पण दोहराते हैं। 1 कुरिन्थियों 10, 11 में कलीसिया के कुछ सदस्य अपने भाई–बहन को भूलकर प्रभु भोज खा लेते थे और उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। अतः प्रभु भोज की एकता हमारी एकता का चित्रण है।

प्रभु भोज में हम आनन्द मनाते हैं क्योंकि प्रभु यीशु ने हमें पापों से मुक्त कराया है और वह फिर से आएगा। पौलुस कहता है कि प्रभु भोज में हम मसीह यीशु के आगमन तक उसकी मृत्यु को स्मरण करते हैं। प्रकाशितवाक्य 19 में मेम्ने के विवाह की चर्चा की गई है। हम यीशु के आने की बाट जोहते हैं कि मेम्ने के विवाह भोज में सहभागी हों। हमें प्रभु भोज में मुंह लटकाए नहीं रहना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभु भोज कलीसिया की आराधना का मुख्य भाग है मूल अंश है।

कलीसिया की आराधना में आधारभूत मान्यताएं। मैं फिर वही प्रश्न पूछता हूं, "धर्मशास्त्र किसे महत्वपूर्ण कहता है?"

पहली मान्यताः मैं प्रकाशितवाक्य 19 को लेकर चल रहा हूं क्योंकि वहां अनन्त आराधना का चित्रण है।

प्रकाशितवाक्य 19:1–2, "इसके बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, "हल्लिलूय्याह! उद्धार और महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर ही की है। क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं। उसने उस बड़ी वेश्या का, जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया और उससे अपने दासों के लहू का बदला लिया है।"

यह बेबीलोन और सांसारिकता का परिदृश्य है।

प्रकाशितवाक्य 19:3–10, "फिर दूसरी बार उन्होंने कहा, "हल्लिलूय्याह! उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा।" तब चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् किया, जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, "आमीन, हल्लिलूय्याह!" तब सिंहासन में से एक शब्द निकला, "हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासो, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उसकी स्तुति करो।" फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जन का सा बड़ा शब्द सुनाः "हल्लिलूय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया"– क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।" तब मैं उसको दण्डवत् करने के लिये उसके पांवों पर गिर पड़ा। उसने मुझ से कहा, "देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूं जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं। परमेश्वर ही को दण्डवत् कर; क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"

कैसा दृश्य है! आराधना के मध्य परमेश्वर की महानता। ए.डब्ल्यू. टोज़र का कहना था, "मेरे विचार में" इस समय की एकमात्र महान आवश्यकता है कि परमप्रधान परमेश्वर के दर्शन द्वारा दिखावे के धार्मिक जनों पर आघात हो। आराधना की पवित्र कला मन्दिर से परमेश्वर की महिमा के प्रस्थान के समान विलोप हो गई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि हमें अपनी युक्तियों के सहारे छोड़ दिया गया है कि आत्मा से उत्पन्न होनेवाली कलीसियाई आराधना की घटी को पूरा करने के लिए असंख्य तुच्छ कार्यकलापों द्वारा कलीसिया के सदस्यों का ध्यान आकर्षित करें।

मैं कहता हूं, परमेश्वर की महानता हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिए, हमारा अनुराग उत्प्रेरित करने के लिए और हमें आराधना में परमेश्वर की विनम्र सराहना के लिए पर्याप्त है। उसकी महानता हमें आराधना में आकृष्ट करती है। टोज़र कहता है, "परमेश्वर की आराधना करना आनन्ददायक है परन्तु वह दीन भी बनाती है और जो परमेश्वर की उपस्थिति में दीन न बने वह परमेश्वर का आराधक कभी नहीं हो सकता। वह नियमों और अनुशासन का पालन करनेवाला, दशमांश देनेवाला, सभाओं में उपस्थित होनेवाला कलीसिया का सदस्य होगा परन्तु वह जब तक अति दीन न हो आराधक नहीं हो सकता।"

यह धर्मशास्त्र का प्रधान सत्य है। परमेश्वर हमारी आराधना की चाह रखता है। वह सर्वोच्च है। वह संपूर्ण सृष्टि को अपनी महिमा के प्रकाशन के लिए संयोजित करता है कि उसकी महिमा हर एक वस्तु के केन्द्र में हो। आप परमेश्वर की सृष्टि के केन्द्र में नहीं हैं। सृष्टि के केन्द्र में परमेश्वर है और उसने इसका रूपांकन ही ऐसा किया है कि सब कुछ उसकी महिमा के चारों ओर परिक्रमा करे।

यहेजकेल 36:22–23, "इस कारण तू इस्राएल के घराने से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता हैः हे इस्राएल के घराने, मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूं जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र ठहराया जहां तुम गए थे। मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊंगा, जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने उनके बीच अपवित्र किया; और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा, तब वे जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।"

परमेश्वर ही परमेश्वर की महिमा करता है। यदि यह स्वार्थ है तो आप सोचेंगे, "मेरी समझ से परे है।" तो फिर कौन उसकी महिमा करेगा? वही तो सर्वोच्च योग्यता रखता है कि महिमा पाए। इस प्रक्रिया में परमेश्वर इतिहास की घटनाओं को अति सुन्दर तरीके से संयोजित करता है कि उसकी महिमा प्रकट हो और उसने कलीसिया को अपनी महिमा का आनन्द लेने के लिए रखा है। प्रकाशितवाक्य 19 में यही परिदृश्य प्रकट है।

अतः परमेश्वर के जन हर्ष से पूर्ण परमेश्वर की महिमा का आनन्द लेते हैं। कभी कभी आराधक आराधना सभा में उपस्थित तो होते हैं परन्तु कहते हैं, "ओह, यह हमारे लिए नहीं है।" यह एक प्रकार से सच भी है क्योंकि हम परमेश्वर केन्द्रित आराधना करते हैं। हम उसकी महिमा का आनन्द लेते हैं। यही तो आराधना है। यह परमेश्वर के जनों द्वारा उसकी महिमा का अनुराग और आनन्द है जो आनन्द की अन्य किसी भी वस्तु से कहीं अधिक महान है। परमेश्वर आपके लिए हमारे अनुराग को परिपूरित करे जैसा कि हम भजनकार, यशायाह और सपन्याह में देखते हैं।

भजन 84:1–2, "हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं! मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला; मेरा तन मन दोनों जीवते परमेश्वर को पुकार रहे।"

भजन 84:4, "क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं; वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे।"

भजन 84:10, "क्योंकि तेरे आंगनों में का एक दिन और कहीं के हजार दिन से उत्तम है। दुष्टों के डेरों में वास करने से अपने परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक भावता है।"

सपन्याह 3:17, "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।"

परमेश्वर हमसे उसकी आराधना चाहता है और परमेश्वर हमारी आराधना के योग्य है। परमेश्वर की आराधना की महानता को देखें। यह प्रकाशितवाक्य 19 में सर्वत्र प्रकट है। वह उद्धारकर्ता है। यहां उद्धार प्रकट है। वह महिमामय है। संपूर्ण महिमा उसी की है। उस संपूर्ण अध्याय में यहोवा की महिमा की स्तुति व्यक्त है। वह महिमामय है। वह सर्वशक्तिमान है। सर्वशक्ति उसकी है। वह सत्य है। वह धर्मी है। उसकी धार्मिकता की भी स्तुति की गई है। बुराई का बदला चुकाने के लिए भी उसकी स्तुति की गई है। वह सच्चा और न्यायी है। वह अनन्त है।

वह सर्वशक्तिमान है। यूहन्ना लिखता है कि हमारा प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज करता है। रोमी सम्राट डोमिशियन ने अपनी पदवी रखी थी, "हमारा प्रभु एवं परमेश्वर!" यूहन्ना को डोमिशियन में पतमुस द्वीप पर काला पानी का दण्ड दिया था। अतः यूहन्ना कहता है, मैं इस मनुष्य को दिखाऊंगा कि परमेश्वर कौन है? प्रकाशितवाक्य में यह उक्ति नौ बार प्रकट है। नये नियम में और कहीं इसका उल्लेख एक ही बार किया गया है परन्तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वह सब जगह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ही सर्वशक्तिमान प्रभु एवं परमेश्वर है। वह सर्वशक्तिमान है।

वह परमप्रधान है। वह पवित्र है, हम अपनी आराधना में अनेक अन्य बातें ला सकते हैं परन्तु मनुष्य संगीत की महानता का भूखा नहीं है। वे हमारे नाटक की महानता के भूखे नहीं हैं। वे किसी भी बात की महानता के भूखे नहीं हैं। वे केवल परमेश्वर की महानता और परमेश्वर को खोजने के भूखे हैं।

आराधना में परमेश्वर के जनों के आनन्द पर ध्यान दें। आराधना ऊबाऊ नहीं है। हम उसे श्रृद्धा अर्पित करते हैं। हम उसमें आनन्द लेते और उसके लिए तैयार रहते हैं। दुल्हन ने अपने को तैयार कर लिया है। जब हम एकत्र होकर एक आवाज़ में आराधना करते हैं तो यह ऐसा है कि जैसे वह उस दिन की आशा में स्वार्गिक आशा के बोध से भर जाती है जिस दिन हम उसे परिपूर्णता में देखेंगे और उसकी संपूर्ण महिमा में

उसका आनन्द लेंगे। यह एक पूर्वकालिक अनुभव है। यह परमेश्वर की आराधना का अनुभव है जो संपूर्ण अनन्तकाल को भर देगा।

अन्ततः परमेश्वर हमें आकर्षित करता है। वह हमें चाहता है। वह योग्य है। वह हमें आराधना में अपने निकट लाता है। अतः मानव केन्द्रित आराधना के संकट से सावधान। हम प्रकाशितवाक्य 19 में ऐसी आराधनाओं की झलक देखते हैं– विस्थापित आराधना का संकट! यूहन्ना उस स्वर्गदूत के पांवों में गिर पड़ा। स्वर्गदूत कहता है, "ऐसा मत कर अपना ध्यान परमेश्वर में केन्द्रित कर।" क्या कलीसिया की आराधना में परमेश्वर से ध्यान हटाकर अन्य बातों में लगाना संभव है? क्या हम संगीत की या गायकों की या प्रचारकों की आराधना कर सकते हैं? अतः विस्थापित भक्ति से सावधान और पथभ्रष्ट उद्देश्यों से सावधान! हमें सुनिश्चित करना है कि परिदृश्य यह है कि हम परमेश्वर की सबसे अधिक इच्छा रखें। परमेश्वर ही हमारा अन्तिम लक्ष्य है। भ्रमित सफलता का संकट! हमें न्याय करने से बचना है– "आपके विचार में इसने या उसने आराधना का संचालन कितना अच्छा किया?" परन्तु मुख्य प्रश्न है "परमेश्वर आराधना और कलीसिया को कितना उचित समझता है?" परमेश्वर केन्द्रित आराधना के सामर्थ्य में विश्वास करें। पिता परमेश्वर आराधकों को खोजता है। धन्य हैं वे जो मेम्ने के विवाह भोज में आमंत्रित हैं। यूहन्ना अध्याय 4 में प्रभु यीशु कहता है कि परमेश्वर ऐसे मनुष्यों को उसकी आराधना के लिए खोजता है। वर्षों से परमेश्वर के खोजी–मनुष्यों के प्रति खोजी–संवेदना की चर्चा की जा रही है परन्तु रोमियों अध्याय 3 में एक समस्या व्यक्त की गई है कि एक भी नहीं है जो परमेश्वर को खोजता है। अतः यदि हम खोजियों के प्रति संवेदशील हैं और एक भी मनुष्य परमेश्वर को नहीं खोजता है तो इसका अर्थ है कि हम कलीसिया में एक के भी प्रति संवेदनशील नहीं हैं। यह एक गंभीर बात है परन्तु वैसी गंभीर नहीं जैसी हम खोज रहे हैं। यहां खोजी कौन है? परमेश्वर खोजता है। अतः हम अपनी आराधना में उसकी महानता को प्रदर्शित करते हैं। वही खोजनेवाला है। तो हम उसके प्रेम, उसके अनुग्रह, उसके क्रोध, उसके न्याय, उसकी दया, उसके आश्चर्य को प्रकट करें और जब हम ऐसा करेंगे तो वह खोज करने का काम संभाल लेगा। वह बहुत अच्छा काम करेगा। अतः हम उसके प्रति संवेदशील बनें। वही है जो हमें आराधना में खोजता है।

पुत्र परमेश्वर हमें आराधना के योग्य बनाता है। प्रकाशितवाक्य 19 में हमें उत्तम वस्त्र कैसे पहनाए गए। मसीह के लहू के द्वारा। पवित्र आत्मा परमेश्वर हमें आराधना में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

1 कुरिन्थियों 14:24–25, "परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे; और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और

तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा, और मान लेगा, कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।"

यह परमेश्वर के आत्मा का काम है। पिता खोजता है। पुत्र योग्य बनाता है और परमेश्वर का आत्मा मार्गदर्शन प्रदान करता है। यदि हम परमेश्वर की महानता को कम करें तो हमारी आराधना में क्या रह जाता है? केवल मनोरंजन। बड़ा जनसमूह होता है। भावनाएं उजागर की जाती हैं परन्तु सब व्यर्थ होता है। हमें दीनता की आवश्यकता है।

दूसरा हमें समुदाय की आवश्यकता है। नया नियम प्रकट करता है कि प्रतिदिन, प्रतिपल, हम जो भी करते हैं वह आराधना है परन्तु यह हमारे एकत्र होने पर किए जानेवाली आराधना के विषय में है। नहेम्याह 12:27–47 में परमेश्वर की प्रजा ने यरूशलेम की शहरपनाह का पुनरुद्धार किया था और पड़ोसी उनका ठट्ठा करके कहते थे कि लोमड़ी के चढ़ने से ही वह दीवार गिर जाएगी। अतः वे अपने संगीतकारों के साथ उत्सव मनाते हैं। वे परमेश्वर की स्तुति गाते हुए उस दीवार पर चलते हैं।

वे एक साथ उत्सव मनाते हैं। आराधना में हम यही करते हैं।

नहेम्याह 12:27–30, "यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के समय लेवीय अपने सब स्थानों में ढूंढ़े गए कि यरूशलेम को पहुंचाए जाएं, जिससे आनन्द और धन्यवाद करके और झांझ, सारंगी और वीणा बजाकर, और गाकर उसकी प्रतिष्ठा करें। तो गवैयों के सन्तान यरूशलेम के चारों ओर के देश से और नतोपातियों के गांवों से, और बेतगिलगाल से, और गेबा और अज्माबेत के खेतों से इकट्ठे हुए; क्योंकि गवैयों ने यरूशलेम के आस–पास गांव बसा लिये थे। तब याजकों और लेवियों ने अपने अपने को शुद्ध किया; और उन्होंने प्रजा को, और फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया।"

नहेम्याह 12:40–43, "तब धन्यवाद करनेवालों के दोनों दल और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम परमेश्वर के भवन में खड़े हो गए; और एल्याकीम, मासेयाह, मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह नामक याजक तुरहियां लिये हुए थे। मासेयाह, शमायाह, एलीआज़ार, उज्जी, यहोहानान, मल्किय्याह, एलाम, और एजेर (खड़े हुए थे) और गवैये जिनका मुखिया यिज्रह्याह था, वह ऊंचे स्वर से गाते बजाते रहे। उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े मेलबलि चढ़ाए, और आनन्द किया; क्योंकि परमेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित

किया था; स्त्रियों ने और बालबच्चों ने भी आनन्द किया। यरूशलेम के आनन्द की ध्वनि दूर दूर तक फैल गई।"

सामूहिक आराधना में परमेश्वर क्या है उसका सार्वजनिक उत्सव है। नहेम्याह 12 में वे आनन्द के साथ ऊंची आवाज़ में स्तुति करते हैं। वे सार्वजनिक रूप से परमेश्वर का आनन्द मनाते हुए हर्षित हैं। सामूहिक आराधना परमेश्वर के उपकारों के लिए सार्वजनिक धन्यवाद है।